गुरुकुल और शास्त्र अध्ययन के क्रेडिट् अर्जन हेतु राष्ट्रीय फ्रेमवर्क

(Gurukula Credit Framework – GCrF)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 की दृष्टि के अनुसार पारम्परिक गुरुकुल शिक्षा को राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF-2023) के साथ संरेखित करने वाला एक नीतिगत फ्रेमवर्क

1. परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करती है जो लचीली, समग्र, बहु-विषयक हो और भारतीय लोकाचार में निहित हो। यह विविध शिक्षण प्रणालियों की पहचान करने और भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) को शिक्षा की मुख्यधारा में एकीकृत करने पर बल देती है।

गुरुकुल - भारत के प्राचीन आवासीय संस्थान हज़ारों वर्षों से वेद, वेदांग, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, आयुर्वेद, योग, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र और भारतीय ज्ञान परम्परा की अन्य शाखाओं में ज्ञान का पोषण करते रहे हैं। उनकी शिक्षा प्रणाली, गुरु-शिष्य निवास, मौखिक अध्ययन/अध्यापन (पाठ), तर्क (शास्त्रार्थ), अनुष्ठान और अनुभवात्मक अधिगम (अनुष्ठान) और सामाजिक जीवन (सेवा) पर आधारित है।

परन्तु ये परम्पराएं आधुनिक कक्षा प्रणालियों के अनुरूप न होने के कारण औपचारिक मान्यता संरचनाओं से काफी हद तक बाहर रहती हैं। गुरुकुलों के शिक्षार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने या अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (ABC) जैसे राष्ट्रीय डाटाबेस में अपने शिक्षण क्रेडिट को स्थानांतरित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

गुरुकुल क्रेडिट फ्रेमवर्क (GCrF) गुरुकुल शिक्षा को राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF 2023) के साथ संरेखित करके इसकी प्रामाणिकता और स्वायत्तता की सुरक्षा करते हुए, इस अंतर के सेतु के रूप में स्थापित करता है। यह राष्ट्रीय और वैश्विक क्रेडिट पारिस्थिकी के अंतर्गत गुरुकुल शिक्षण की समरूपता, गतिशीलता और मान्यता के लिए एक समुचित मार्ग प्रदान करता है।

2. उद्देश्य

- गुरुकुल और शास्त्र अध्ययन को राष्ट्रीय राष्ट्रीय फ्रेमवर्क (NCrF 2023) में संघटित करना।
- गुरुकुल कक्षा (प्रथमा–आचार्य–विद्यावारिधि) और NCrF स्तरों 3–12 के बीच समुचित समरूपता को निर्धारित करना।
- गुरुकुल शिक्षण के पूर्ण आयाम जैसे - पाठ, शास्त्रार्थ, अध्यापन, अनुष्ठान, सेवा, तपस्या और अनुसंधान को क्रेडिट् में परिवर्तन करना।
- पूर्व अधिगम की मान्यता (RPL) के लिए कार्य प्रणाली प्रदान करना ताकि गुरुकुल-प्रशिक्षित विद्वान् औपचारिक शैक्षणिक गतिशीलता प्राप्त कर सकें।
- NCrF समरूपता मापदंडों के अंतर्गत पाठ्यक्रम, शिक्षाप्रणाली और मूल्यांकन में गुरुओं और गुरुकुलों की स्वायत्तता को संरक्षित करना।

- गुरुकुल शिक्षा एवं मुख्य धारा में उच्च शिक्षण संस्थानों (HEIs) के बीच परस्पर गतिशीलता को सुदृढ करना।
- व्यापक भारतीय ज्ञान परम्परा के विषयों—पाठ्य, वैज्ञानिक, कलात्मक और व्यावसायिक—को एक एकीकृत ढाँचे के तहत समाहित करना।

3. औचित्य

यद्यपि राष्ट्रीय क्रेडिट् फ्रेमवर्क (NCrF 2023) विद्यालय से लेकर पी.हेच.डी. स्तर तक एक एकीकृत क्रेडिट संरचना प्रदान करता है। किन्तु यह गुरुकुल शिक्षा के विशिष्ट शिक्षण वातावरण को सीधे समाधान नहीं करता है। गुरुकुल शिक्षण गहन, मौखिक, अनुभव-आधारित और समग्र होता है, ऐसे विशिष्टताएँ जिन्हें वर्तमान के कक्षा मॉडल द्वारा समुचित रूप से प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता।

अतः NCrF सिद्धांतों का प्रासंगिक अनुप्रयोग आवश्यक है। गुरुकुल क्रेडिट फ्रेमवर्क (GCrF) गुरुकुल शिक्षा को उसकी पारंपरिक अखंडता से समझौता किए बिना मापने योग्य और हस्तांतरणीय क्रेडिट में अनुवाद करके इस आवश्यकता को पूरा करता है।

GCrF के लिए प्रमुख कारण:

- NCrF व्यापक है और यह निर्दिष्ट नहीं करता है कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति इसकी संरचना में बंधा हो।
- गुरुकुल की पद्धति - पाठ, शास्त्रार्थ, अनुष्ठान और सेवा को क्रेडिट मैपिंग के लिए अनुकूल मान्यता की आवश्यकता है।
- ऐसे प्रसंग के बिना गुरुकुल के विद्यार्थियों को क्रेडिट पारिस्थितिकी में बहिष्करण या गलत प्रतिनिधित्व की आशंका होती है।
- GCrF गुरु-शिष्य पद्धति का सम्मान करते हुए शास्त्र और आधुनिक शिक्षण परिणामों के बीच मापन योग्य समरूपता को परिभाषित करता है।
- यह औपचारिक गतिशीलता के लिए पूर्व अधिगम की मान्यता (RPL) और अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (ABC) एकीकरण प्रदान करता है।
- गुरुकुल और विश्वविद्यालय प्रणालियों के बीच द्वि-दिशात्मक क्रेडिट हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है।
- पारम्परिक और आधुनिक शिक्षा के बीच सम्मान की समानता को यथावत् रखता है जिससे राष्ट्रीय शिक्षा फ्रेमवर्क में IKS को एकीकृत करने के NEP 2020 के लक्ष्य को साकार किया जा सके।

4. मार्गदर्शक सिद्धांत

- **1 क्रेडिट = 30 सांकेतिक शिक्षण घंटे** (Notional Learning Hours) जिसमें मौखिक अध्ययन, सस्वर पाठ, वाद-विवाद, अभ्यास, चिंतन और सेवा शामिल है।
- NCrF के साथ अनुसार **प्रति शैक्षणिक वर्ष 40 क्रेडिट** (≈1200 घंटे)।
- गुरुकुल शिक्षण परिणाम कक्षा शिक्षण के समरूप हैं, न कि समान।
- मैपिंग दिशानिर्देश यह निर्धारित करेंगे कि पारंपरिक अभ्यास सांकेतिक घंटों के अनुरूप हों।

- गुरुकुल शिक्षण के सभी पद्धति/स्वरूप जैसे बौद्धिक, अनुष्ठानिक, कलात्मक, व्यावसायिक और सामाजिक पद्धतियाँ क्रेडिट् में परिवर्तन करने योग्य हैं।
- मूल्यांकन परिणाम-आधारित है और गुरु-शिष्य परंपरा का सम्मान करता है।
- पूर्व अधिगम की मान्यता (RPL) औपचारिक संस्थानों के बाहर प्राप्त शिक्षण को मान्य करेगी।
- लचीलापन और गतिशीलता: गुरुकुल और विश्वविद्यालय प्रणालियों में प्रवेश, निकास और पुनः प्रवेश की अनुमति है।
- द्वि-दिशात्मक एकीकरण: आधुनिक उच्च शिक्षण संस्थाओं में अर्जित क्रेडिट को गुरुकुल कार्यक्रमों में भी स्थानांतरित किया जा सकता है।

गुरुकुल चरण	NCrF समतुल्य स्तर	मुख्यधारा समतुल्य	क्रेडिट/वर्ष
Purva-Madhyama / Prathama	स्तर 3	कक्षा 10	40
Madhyama / Uttar-Madhyama	स्तर 4–5	कक्षा 11–12	40
Prak-Shastri	स्तर 5	वरिष्ठ/उच्चतर माध्यमिक	40
Shastri (Traditional BA)	स्तर 6–8	स्नातक (3 Years)	40 / year
Acharya (Traditional MA)	स्तर 9–10	स्नातकोत्तर (2 Years)	40 / year
Vidya Varidhi (Vidwat/Doctoral)	स्तर 11–12	Ph.D. / Post-Doc	Flexible

6. क्रेडिट् यजेशन के घटक

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षण परस्पर मिले हुए तरीकों से होता है, पाठ, अध्ययन, अभ्यास, संवाद, सेवा और चिंतन से मिला रहता है। इन्हें NCrF के साथ संरेखित करने के लिए निम्नलिखित घटकों की पहचान की गई है:

घटक	शिक्षण गतिविधियाँ	लगभग वेटेज	क्रेडिट/वर्ष
शास्त्र पाठ (मूल अध्ययन)	वेद, उपनिषद, दर्शन, व्याकरण, शास्त्र-भाष्य, दर्शनशास्त्र, भाषाएँ	45–50 %	18–20
शास्त्रार्थ/वाद	मौखिक वाद-विवाद, प्रतिप्रश्न, न्याय-शैली की विचार-विमर्श	15–20 %	6–8
अध्यापन (शिक्षण अभ्यास)	सहकर्मी शिक्षण, मार्गदर्शन, व्याख्या सत्र	10–15 %	4–6
अनुष्ठान/प्रयोग	यज्ञ, जप, अनुष्ठान, योग, अनुप्रयुक्त शास्त्र	10–15 %	4–6
अनुक्रमण/शोध एवं लेखन	स्व-अध्ययन, पांडुलिपि संपादन, भाष्य, चिंतनशील निबंध	10–15 %	4–6
समाज/सेवा	सेवा, सामूहिक जीवन, नेतृत्व, नैतिक अभ्यास	Integrated	Variable
शारीरिक एवं स्वास्थ्य	योग, खेल, मार्शल आर्ट, स्वास्थ्य दिनचर्या	Integrated	Variable

टिप्पणी: ये शिक्षण भार गुरुकुल शिक्षण की समग्र प्रकृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यक्तिगत संस्थान 40 क्रेडिट (≈ 1200 घंटे) की समग्र वार्षिक क्रेडिट आवश्यकता का पालन करते हुए इन सीमाओं के अंदर भिन्न हो सकते हैं।

7. निर्धारण और मूल्यांकन

प्रामाणिकता और राष्ट्रीय समरूपता बनाए रखने के लिए मूल्यांकन पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोणों का संयोजन करेगा:

- **वाक्-परीक्षा** – समझ और अभिव्यक्ति का आकलन करने के लिए मौखिक परीक्षाएँ।
- **शास्त्रार्थ / वाद** – विश्लेषणात्मक क्षमता और तर्क के लिए संरचित चर्चा।
- **पाठानुसन्धान** – सस्वर पाठ की सटीकता और पाठ में विद्वत्ता।
- **अनुष्ठान प्रयोग** – अनुष्ठानिक या अनुप्रयुक्त योग्यता का प्रदर्शन।
- शैक्षणिक समरूपता के लिए लिखित या डिजिटल परीक्षाएँ।
- अनुसंधान फलितांश के लिए उपलब्धि परिपत्र संग्रह, पांडुलिपियाँ या परियोजना-आधारित मूल्यांकन।

8. मान्यता और एकीकरण के मार्ग

GCrF को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने के लिए सभी उच्च शिक्षण संस्थान (HEIs), जिनमें संस्कृत विश्वविद्यालय और भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) शिक्षण प्रदान करने वाले संस्थान शामिल हैं, वे एक सक्षम एवं समुचित तंत्र विकसित करेंगे:

- **गुरुकुलों का राष्ट्रीय सर्वेक्षण:** शिक्षण विविधता और आवश्यकताओं का संलेख करना।
- **मान्यता और पहचान:** गुरुकुलों के शिक्षण पद्धति को स्वतंत्रता बनाए रखते हुए मान्यता प्राप्त करने में सक्षम बनाने वाले मान्यता मानदंड स्थापित करना।
- **पाठ्यक्रमों की मान्यता:** गुरुकुल द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रमों को नियामक अध्यादेशों के तहत मान्यता प्रदान करना।
- **पाठ्यक्रम-स्तरीय समरूपता:** NCrF स्तरों के लिए लचीली मैपिंग हेतु समरूपता पाठ्यक्रम/मॉड्यूल स्तर पर संचालित होगी।
- **मूल्यांकन मानक:** मौखिक, लिखित और व्यावहारिक मूल्यांकन को औपचारिक रूप से क्रेडिट् में परिवर्तन किया जाएगा।
- **बाहरी / निजी पंजीकरण:** गुरुकुल के विद्यार्थी क्रेडिट प्राप्त करने के लिए मान्यता प्राप्त बोर्ड/विश्वविद्यालय परीक्षाओं के लिए पंजीकरण कर सकते हैं।
- **क्रेडिट हस्तांतरण और ट्विनिंग:** अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स (ABC) के माध्यम से गुरुकुल और विश्वविद्यालय प्रणालियों के बीच द्वि-मार्गीय गतिशीलता।
- **क्लस्टर / कंसोर्टियम मॉडल:** छोटे गुरुकुल मान्यता, APAAR ID और क्रेडिट अपलोडिंग के प्रबंधन के लिए क्लस्टर बना सकते हैं।
- **सहयोग और परामर्श:** HEIs और IKS निकाय सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करेंगे और पुनरावृत्ति से बचेंगे।
- **नीति संयोजन:** पारंपरिक शिक्षा को शामिल करने की सुविधा के लिए प्रासंगिक राष्ट्रीय नीतियों (जैसे, RTE अधिनियम, मूल्यांकन मानदंड) की समीक्षा की जा सकती है।

DRAFT

9. शासन और कार्यान्वयन

- **राष्ट्रीय समन्वय:** कार्यान्वयन की देखरेख UGC/MoE के तहत एक अंतःसंस्थागत समन्वयन समिति द्वारा की जाएगी।
- **संस्थागत तंत्र:** प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्था गुरुकुल और IKS क्रेडिट प्रबंधन के लिए एक प्रकोष्ठ बनाएगा।
- **क्षमता निर्माण:** क्रेडिट मैपिंग और ABC उपयोग पर शिक्षकों और प्रशासकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- **डिजिटल एकीकरण:** सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को APAAR ID जारी किए जाएंगे; क्रेडिट ABC पर अपलोड किए जाएंगे।
- **पर्यवेक्षण:** गुणवत्ता, प्रामाणिकता और विद्यार्थियों की गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए आवधिक समीक्षा।

10. नीति वक्तव्य

गुरुकुल क्रेडिट फ्रेमवर्क (GCrF) राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क का एक रणनीतिक विस्तार है, जिसे भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का सम्मान करने, उन्हें संरक्षित करने और सशक्त बनाने के लिए विकसित किया गया है। यह गुरुकुल शिक्षा को उसकी अस्मिता आदि से समझौता किए बिना मुख्यधारा के क्रेडिट इकोसिस्टम में लाता है।

गुरुकुल शिक्षण को राष्ट्रीय मान्यता, सुवाह्यता तथा शैक्षणिक गरिमा सुनिश्चित करते हुए, गुरुकुल क्रेडिट फ्रेमवर्क (GCrF) राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की उस परिकल्पना को साकार देता है, जिसके अंतर्गत शिक्षा प्रणाली परंपरा में निहित आधुनिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील तथा आजीवन अधिगम के प्रति प्रतिबद्ध है।

DRAFT